For a debate that is coming I requisitioned certain balance sheets and annual reports of a private limited company which is going to be taken over by the Government.

The Library Section has been trying with the Ministry of Law, Justice and Company Affairs and the Ministry of Industry. They are withholding the papers. I am trying for the last few days to get the papers. How can we carry on the work in Parliament? Because it is Maruti, the papers will not be made available. This is most surprising and I am most distressed about it. This has never happened.

SHRI A. NEELALOHITHADASAN: (Trivandrum): You are not allowing me to make a brief statement even. We are walking out in protest.

12.16 hrs.

Shri A. Neelalohithadasan and some other hon. Members then left the House.)

12.16 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) RANI SATI TEMPLE IN RAJASTHAN

श्री भीम सिंह (झुंझुनू) : अध्यक्ष जी, दिनांक 3-12-1980 को माननीय सदस्यों ने "सती प्रथा" की पुनरावृत्ति को रोके जाने हेतु एक स्थगन प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत करने हेतु स्वीकृति चाहने को अपने उद्‌गार प्रकट किए। माननीया प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा जी ने भी इस विषय पर सदन में एक वक्तव्य दिया। यह विषय मेरे चुनाव क्षेत्र झुंझनू के श्री राणी सती मंदिर से संबंधित था। झुंझनू का यह राणी सती का मंदिर सात सौ वर्ष पहले अपने सतीत्व को बचाने हेतु हुए सती जी का है। इस मन्दिर पर सदियों से प्रतिवर्ष एक विशाल मेला भरता है और लाखों श्रद्धालु भक्त कलकत्ता, बम्बई, मद्रास व सारे दश के कोने-कोने से वहां श्री सती माता की पूजा व दर्शन करने को आते हैं। विक्रम संवत् 1352 में इन सती जी के पति जब लड़ाई के मैदान में युद्ध करते हुए मारे गए तब अपने सतीत्व की रक्षा करने हेतु उन्होंने अपने आपको अग्नि को समर्पित कर दिया। झुंझनू की इन राणी सती माता के 12 मन्दिर विदेशों में हैं और 113 मन्दिर भारत में। जिस जबरन सती प्रथा की माननीय सदस्यों ने व माननीया प्रधान मंत्री जी ने निन्दा की है, मैं समझता हूं कि उनका तात्पर्य जौहर करके अपने सतीत्व की रक्षा हेतु "सती" होने वाली वीरांगनाओं के लिए कदापि नहीं था। राजस्थान में दस बार बड़े-बड़े "जौहर" हुए—तीन बार जौहर चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) में, दो बार जैसलमेर में, एक बार बयाना (भरतपुर) में, एक बार भटनेर (बीकानेर) में, एक बार जालौर (मारवाड़) में, एक बार सीवाणा (मारवाड़) में और एक बार रणथंभों में। इन जौहरों में अपने सतीत्व की रक्षा हेतु हजारों नारियों ने अपने आपको अग्नि में समर्पित कर सती हो जातीं थीं और राजपूत शूर-वीर केसरिया वस्त्र धारण कर युद्ध में जूझकर देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देते थे, यही "जौहर" कहलाता था। इन सती सूरमाओं (अननोन वारीयर्स) की वीर-पूजा के हेतु राजस्थान में श्रद्धा से लाखों लाख स्त्री-पुरुष मेले लगाते हैं। जुलूस निकालते हैं। इन में प्रमुख है—चित्तौड़ गढ़ का सती मेला, रामदेवजी का मेला, गूगा जी का मेला, तेजाजी का मेला, व झुंझूनू का राणी सती मेला। जिस प्रकार इंडिया गेट नई दिल्ली में "अमर-ज्योति" प्रज्वलित रख कर "अननोन वारीयर्स" के प्रति श्रद्धांजलि दी जाती है, इन सती व सूरमाओं के जुलूस निकालकर, मेले लगाकर

[श्री भीम सिंह]

इनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जाती रही है इन जुलूसों का, इन मेलों का, इन मंदिरों का कभी भी किसी को सती प्रथा के लिए प्रेरणा देना अथवा सती प्रथा को रिवाइव करना नहीं है। सती शब्द भारत की नारियों के सतीत्व का सम्मानसूचक शब्द है, जैसे सती अनुसूइया, सती सावित्री इत्यादि। अतः "सती" शब्द की महानता व पवित्रता को दूषित नहीं किया जाना चाहिए और "सती" शब्द से चौंकना भी नहीं चाहिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : अभी आपने नियम 377 में एक मामला माननीय सदस्य को उठाने की इजाजत दी है। मैं यह जानना चाहता हूं कि अभी तक ऐसा पुरुष कोई नहीं निकला, जो अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, सती होकर ऊपर गया हो।

अध्यक्ष महोदय : : वाजपेयी जी, आप तो इन सब बातों से फ्री हैं। वैसे वह "सती" की बात नहीं कर रहे थे "जौहर" की बात कर रहे थे।

(ii) Paddy cultivation by Kerala farmers

SHRI B. K. NAIR (Quilon): A very serious crisis is developing on the food production front in Kerala. The paddy cultivators in the entire Kuttanad area in the State extending over 60,000 hectares of land, known otherwise as the 'rice bowl' of Kerala, have declared their intention to allow their lands to lie fallow for the current season and the sowing operations, which should have commenced about 4 to 6 weeks ago, have not been taken up.

Paddy growing in Kuttanad has long ceased to be a remunerative proposition and in the case of most of the cultivators, numbering over 70,000 they have been carrying it on just because it is their only means of livelihood and it is the only job within their knowledge. Apart from the cost of inputs, which has been rising fast, the cost of the various operations involving manual labour has also risen enormously and this together with unhelpful if not altogether hostile attitude adopted by certain trade unions and their leaders, have further added to their burden. The yield per acre in this area is substantially lower than the yields in the various other producing States.

A new problem was added by the fresh demands put up by the workers for further increase in wages, which are already amongst the highest in the whole country, accompanied by reduction in the hours of work and the daily tasks. At conference recently held, attended by three of the Ministers of the State, a settlement was arrived at in regard to wages. But even before the ink was dry, certain influential groups amongst the workers put up fresh demands for further increase in wages and added other conditions. It is as an immediate result of this that the cultivators have declared their intention not to commence operations.

It is clear, that certain elements are bent upon creating a serious food shortage in the State, which is chronically deficit in the matter of production and has always depended upon supplies from the Centre. Obviously, their object is political and the usual charges of neglect and discrimination are bound to be raised against the Centre. I therefore call upon the Central Government to take appropriate and timely steps to see that the confidence is restored in the minds of the cultivators and they are enabled to take up commencement of cultivation without further loss of time.

(iii) Eradication of the evil practice of prostitution

SHRI JANARDHANA POOJARY (Mangalore): Sir, I want to invite the attention of the Government of India towards the evil practice prevailing in some areas of Karnataka and Maha-